Gunahon Ke 5 Dunyavi Nuqsanat (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 312
Weekly Booklet : 312

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की किताब "नेकी की दा'वत" की

एक क़िस्त बनाम

गुनाहों के 5 दुन्यावी नुक़्सानात

सफ़हात 24

क़ुरआन से शफ़ाअ़त का सुबूत	03
शफ़ाअ़त की 8 अक़्साम	05
दुआ क़बूल न होगी	13
अ़ज़ाब नाज़िल होने का सबब	17

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ़

अज़ : शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ١ ص ٤٠ دار الفكر بيروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

नामे रिसाला	:	**गुनाहों के 5 दुन्यावी नुक़्सानात**
सिने त़बाअ़त	:	ज़िल क़ा'दह **1444** हि., जून **2023** ई.
ता'दाद	:	000
नाशिर	:	**मक्तबतुल मदीना**

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह रिसाला छापने की इजाज़त नहीं है।

गुनाहों के 5 दुन्यावी नुक़्सानात

येह रिसाला (**गुनाहों के 5 दुन्यावी नुक़्सानात**)

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई मेल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद –1, गुजरात।

MO. 9898732611 • Email : hind.printing92@gmail.com

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इ़ल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इ़ल्म पर अ़मल न किया)। (تاریخ دمشق لابن عساکِر ج٥١ ص١٣٨ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

येह मज़्मून किताब "नेकी की दा'वत" के सफ़हा 450 ता 467 से लिया गया है।

गुनाहों के 5 दुन्यावी नुक़्सानात

दुआए अ़त्तार : या रब्बल मुस्त़फ़ा ! जो कोई 22 सफ़ह़ात का रिसाला **"गुनाहों के 5 दुन्यावी नुक़्सानात"** पढ़ या सुन ले उसे हमेशा अच्छे काम करने और बुरे कामों से बचने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा और क़ियामत के रोज़ सब से आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त नसीब फ़रमा।

اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ والہٖ وسلم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत की ह़िकायत

ह़ज़रते अबुल मुवाहिब शाज़िली رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : जनाबे रिसालत मआब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझे ख़्वाब में अपने दीदारे फ़ैज़ आसार से मुशर्रफ़ किया और फ़रमाया : "तुम बरोज़े क़ियामत मेरे एक लाख उम्मतियों की शफ़ाअ़त करोगे।" मैं ने अ़र्ज़ की : ऐ मेरे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मुझ पर इस क़दर इन्आ़मो इकराम कैसे हुवा ? इर्शाद फ़रमाया : इस लिये कि तुम मुझ पर दुरूद का हदिय्या पेश करते रहते हो। (طبقات کبریٰ للشعرانی، 2/101)

पढ़ते रहो दुरूदो सलाम भाइयो ! मुदाम — फ़ज़्ले ख़ुदा से दोनों जहां के बनेंगे काम

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

हिकायते दुरूद के ज़िम्न में "शफ़ाअ़त" के मुतअ़ल्लिक़ मदनी फूल

उ़लमाए किराम शफ़ाअ़त फ़रमाएंगे

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! سُبْحٰنَ الله ! दुरूदे पाक पढ़ने की भी क्या ख़ूब बरकतें हैं ! इस हिकायते दुरूद से येह भी मा'लूम हुवा कि बरोज़े क़ियामत अहलुल्लाह (या'नी **अल्लाह** वाले) गुनहगारों की शफ़ाअ़त फ़रमाएंगे । याद रहे ! मुत़्लक़न शफ़ाअ़त का इन्कार हुक्मे क़ुरआनी का इन्कार और कुफ़्र है । मौक़अ़ की मुनासबत से शफ़ाअ़त के बारे में नेकी की दा'वत के कुछ मदनी फूल आप की त़रफ़ बढ़ाता हूं, क़बूल फ़रमा कर अपने दिल के मदनी गुलदस्ते में सजाते जाइये, اِنْ شَآءَالله ईमान को ताज़गी मिलने के साथ साथ कई वस्वसों की काट भी हो जाएगी । शफ़ाअ़त के मा'ना हैं : "गुनाहों से मुआ़फ़ी की सिफ़ारिश ।" सब से पहले उ़लमाए किराम के शफ़ाअ़त करने के मुतअ़ल्लिक़ एक ईमान अफ़रोज़ रिवायत समाअ़त फ़रमाइये चुनान्चे ह़ज़रते जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللهُ عَنْه से रिवायत है कि ख़ातमुल मुरसलीन صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शादे दिल नशीन है : (मैदाने क़ियामत में) आ़लिम और आ़बिद लाए जाएंगे, आ़बिद (या'नी इ़बादत गुज़ार) से कहा जाएगा : जन्नत में दाख़िल हो जाओ और आ़लिम से कहा जाएगा : तुम अभी ठहरो ताकि लोगों की शफ़ाअ़त करो, इस सिले में कि तुम ने उन को अदब सिखाया । (شعب الایمان، 2/268، حدیث:1717)

मुझ को ऐ अ़त्तार सुन्नी आ़लिमों से प्यार है
اِنْ شَآءَالله दो जहां में मेरा बेड़ा पार है

(वसाइले बख़्शिश, स. 646)

जिन आयात में शफ़ाअ़त का इन्कार है उन की वज़ाहत

कुरआने करीम की जिन आयतों में शफ़ाअ़त की नफ़ी (या'नी इन्कार) है वहां मुराद है **अल्लाह** पाक के हां कोई भी जब्रन शफ़ाअ़त नहीं कर सकता या ग़ैर मुस्लिमों की शफ़ाअ़त नहीं या बुत शफ़ीअ़ (या'नी शफ़ाअ़त करने वाले) नहीं हैं। मसलन पारह 3 **सूरतुल बक़रह** आयत नम्बर 254 में है : ﴿يَوْمٌ لَّا بَيْعٌ فِيْهِ وَلَا خُلَّةٌ وَّلَا شَفَاعَةٌ﴾ (پ3، البقرة:254) **तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** वोह दिन जिस में न ख़रीद फ़रोख़्त है न काफ़िरों के लिये दोस्ती न **शफ़ाअ़त।** पारह 29 **सूरतुल मुद्दस्सिर** आयत नम्बर 48 में इर्शाद होता है : ﴿فَمَا تَنْفَعُهُمْ شَفَاعَةُ الشّٰفِعِيْنَ ﴿٤٨﴾﴾ (پ29، المدثر:48) **तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** तो उन्हें सिफ़ारिश्यों की सिफ़ारिश काम न देगी।

कुरआन से शफ़ाअ़त का सुबूत

जहां कुरआन शरीफ़ में शफ़ाअ़त का सुबूत है वहां **अल्लाह** के प्यारों की मोमिनों के लिये "शफ़ाअ़त बिल इज़्न" मुराद है या'नी **अल्लाह** पाक के प्यारे बन्दे अपनी महबूबिय्यत और वजाहत व मर्तबे की बिना पर **अल्लाह** पाक की इजाज़त से मोमिनों को बख़्शवाएंगे। मसलन पारह 3 **सूरतुल बक़रह** आयत 255 में इर्शादे रब्बुल इबाद है :

﴿مَنْ ذَا الَّذِيْ يَشْفَعُ عِنْدَهٗۤ اِلَّا بِاِذْنِهٖ﴾ **तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** वोह कौन है जो उस के यहां **सिफ़ारिश** करे बे उस के हुक्म के। (پ3، البقرة:255) पारह 16 **सूरए मरयम** आयत नम्बर 87 में है : ﴿لَا يَمْلِكُوْنَ الشَّفَاعَةَ اِلَّا مَنِ اتَّخَذَ عِنْدَ الرَّحْمٰنِ عَهْدًا ﴿٨٧﴾﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : लोग शफ़ाअ़त के मालिक नहीं मगर वोही जिन्हों ने रह़मान के पास क़रार कर रखा है।

नेकियां बिल्कुल नहीं हैं नामए आ'माल में

कीजिये अ़त्तार की आ कर शफ़ाअ़त या रसूल

(वसाइले बख़्शिश, स. 142)

कौन कौन शफ़ाअ़त करेगा ?

दा'वते इस्लामी के **मक्तबतुल मदीना** की 1250 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**बहारे शरीअ़त** जिल्द अव्वल" सफ़ह़ा 139 ता 141 पर क़ियामत की मन्ज़र कशी में **शफ़ाअ़त** के **मुतअ़ल्लिक़** तफ़्सीली मज़्मून में येह भी है : अब तमाम अम्बिया अपनी उम्मत की **शफ़ाअ़त** फ़रमाएंगे, औलियाए किराम, शुहदा, उ़लमा, हुफ़्फ़ाज़, हुज्जाज बल्कि हर वोह शख़्स जिस को कोई मन्सबे दीनी इनायत हुवा अपने अपने **मुतअ़ल्लिक़ीन** की **शफ़ाअ़त** करेगा। ना बालिग़ बच्चे जो मर गए हैं (वोह) अपने मां बाप की **शफ़ाअ़त** करेंगे, यहां तक कि **उ़लमा** के पास कुछ लोग आ कर अ़र्ज़ करेंगे : हम ने आप के वुज़ू के लिये फ़ुलां वक़्त में पानी भर दिया था, कोई कहेगा कि मैं ने आप को इस्तिन्जे के लिये ढेला दिया था, उ़लमा उन तक की **शफ़ाअ़त** करेंगे।

ह़िर्ज़े जां ज़िक्रे शफ़ाअ़त कीजिये   नार से बचने की सूरत कीजिये

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 194)

शर्ह़े कलामे रज़ा : इस शे'र में मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! **शफ़ाअ़ते मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का

ख़ूब तज़्किरा करते रहिये गोया अपने लिये इसे मिस्ले पनाह गाह बना लीजिये कि "ज़िक्रे शफ़ाअ़त" आख़िरत की भलाई और अ़ज़ाबे जहन्नम से नजात का वसीला बन जाए।

तुझ सा सियाह कार कौन उन सा शफ़ीअ़ है कहां !

फिर वोह तुझी को भूल जाएं दिल येह तेरा गुमान है

(ह़दाइके़ बख़्शिश, स. 179)

शर्हे कलामे रज़ा : इस शे'र में आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ अपने आप से तवाज़ुअ़न (या'नी बतौ़रे इन्किसारी) फ़रमा रहे हैं : तू सब से बड़ा गुनहगार ही सही मगर तू जिस **प्यारे मुस्त़फ़ा** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ग़ुलाम है उन से बड़ा **शफ़ाअ़त** करने वाला भी तो कोई नहीं। इस लिये ऐ मेरे ग़मगीन दिल ! तसल्ली रख ! बरोज़े ह़श्र शफ़ीए़ मह़शर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तुझे हरगिज़ नहीं भूलेंगे।

या रसूलल्लाह ! मुजरिम ह़ाज़िरे दरबार है नेकियां पल्ले नहीं सर पर गुनह का बार है

तुम शहे अबरार येह सब से बड़ा इस्यां शिआ़र यूं शफ़ाअ़त का येही सब से बड़ा ह़क़दार है

(वसाइले बख़्शिश, स. 222)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

शफ़ाअ़त की 8 अक़्साम

मुह़क़्क़िक़ अ़लल इत़्लाक़, ख़ातिमुल मुह़द्दिसीन, ह़ज़रते अ़ल्लामा शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देह्लवी رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ शफ़ाअ़त की क़िस्में बयान करते हुए फ़रमाते हैं : ﴾1﴿ शफ़ाअ़त की पहली क़िस्म शफ़ाअ़ते उ़ज़्मा है

जिस का तमाम मख़्लूक़ात को नफ़्अ़ मिलेगा और येह हमारे मोह़तरम नबी, मक्की मदनी صَلَّى اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ही के साथ ख़ास है या'नी अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ السَّلَام में से किसी और नबी को इस पर जुरअत और पेशक़दमी की मजाल न होगी और येह शफ़ाअ़त लोगों को आराम पहुंचाने, मैदाने ह़श्र में देर तक ठहरने से छुटकारा दिलाने, **अल्लाह** करीम के फ़ैसले और ह़िसाब के जल्दी करने और क़ियामत के दिन की सख़्ती व परेशानी से निकालने के लिये होगी ﴾2﴿ दूसरी क़िस्म की शफ़ाअ़त एक क़ौम को बे ह़िसाब जन्नत में दाख़िल करवाने के लिये होगी और येह शफ़ाअ़त भी हमारे **नबिय्ये पाक** صَلَّى اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये साबित है और बा'ज़ उ़लमाए किराम के नज़्दीक येह **शफ़ाअ़त** ह़ुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ही के साथ ख़ास है ﴾3﴿ तीसरी क़िस्म की **शफ़ाअ़त** उन लोगों के बारे में होगी कि जिन की नेकियां और बुराइयां बराबर बराबर होंगी और **शफ़ाअ़त** की मदद से **जन्नत** में दाख़िल होंगे ﴾4﴿ चौथी क़िस्म की **शफ़ाअ़त** उन लोगों के लिये होगी जो कि दोज़ख़ के ह़क़दार हो चुके होंगे तो ह़ुज़ूरे पुरनूर, शाफ़ेए़ यौमुन्नुशूर صَلَّى اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم शफ़ाअ़त फ़रमा कर उन को **जन्नत** में लाएंगे ﴾5﴿ पांचवीं क़िस्म की **शफ़ाअ़त** मर्तबे की बुलन्दी और बुज़ुर्गी की ज़ियादती के लिये होगी ﴾6﴿ छटी क़िस्म की **शफ़ाअ़त** उन गुनहगारों के बारे में होगी जो कि जहन्नम में पहुंच चुके होंगे और **शफ़ाअ़त** की वज्ह से निकल आएंगे और इस त़रह़ की शफ़ाअ़त दीगर अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ السَّلَام फ़िरिश्ते, उ़लमा और शुहदा भी फ़रमाएंगे ﴾7﴿ सातवीं क़िस्म की **शफ़ाअ़त**

जन्नत खोलने के बारे में होगी ﴾8﴿ आठवीं क़िस्म की **शफ़ाअ़त** ख़ास कर मदीनए मुनव्वरह वालों और मदीने के ताजवर, सुल्ताने बह़्रो बर صَلَّی اللہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के रौज़ए अन्वर की ज़ियारत करने वालों के लिये ख़ुसूसी त़रीक़े पर होगी। (اشعۃ اللمعات، 4/404 ملخصًا)

ह़श्र में हम भी सैर देखेंगे मुन्किर आज उन से इल्तिजा न करे

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 142)

शर्हे कलामे रज़ा : मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ इस शे'र में फ़रमाते हैं : जो लोग आज दुन्या में **अल्लाह** पाक के प्यारों को "बे इख़्तियार" समझते हैं, बरोज़े मह़शर हम भी उन का ख़ूब तमाशा देखेंगे कि किस त़रह़ बे बसी और बेचैनी के साथ अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ السَّلَام के पाक दरबारों में शफ़ाअ़त की भीक लेने के लिये धक्के खा रहे होंगे! मगर नाकामी का मुंह देखेंगे। जभी तो कहा जा रहा है :

आज ले उन की पनाह आज मदद मांग उन से फिर न मानेंगे क़ियामत में अगर मान गया

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 56)

शर्हे कलामे रज़ा : या'नी आज इख़्तियाराते मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ए'तिराफ़ कर ले और इन के दामने करम की पनाह में आ जा और इन से मदद मांग। अगर तूने येह ज़ेह्न बना लिया कि सरकारे मदीना صَلَّی اللہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **अल्लाह** पाक की अ़त़ा से भी मदद नहीं कर सकते तो याद रख! कल बरोज़े क़ियामत जब **अल्लाह** पाक के प्यारे नबी صَلَّی اللہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शाने मह़बूबी ज़ाहिर होगी और तू इख़्तियारात तस्लीम कर लेगा और **शफ़ाअ़त**

की सूरत में मदद की भीक लेने दौड़ेगा तो उस वक़्त सरकारे नामदार صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم नहीं "मानेंगे" कि दुन्या "दारुल अ़मल" (या'नी अ़मल की जगह) थी अगर वहीं "मान लेता" तो काम हो जाता, अब "मानना" काम न देगा क्यूं कि आख़िरत दारुल अ़मल नहीं "दारुल जज़ा" (या'नी दुन्या में जो अ़मल किया उस का बदला मिलने की जगह) है।

शफ़ाअ़त की उम्मीद पर गुनाह करने वाला कैसा है ?

शफ़ाअ़त की उम्मीद पर गुनाह करने वाला ऐसा ही है जैसे अच्छा डॉक्टर मिल जाने की उम्मीद पर कोई ज़ह्र खा ले या हड्डियों के माहिर डॉक्टर के मिलने की उम्मीद पर गाड़ी के नीचे ख़ुद को गिरा कर सारे बदन की हड्डियां तुड़वा ले। और यक़ीनन कोई भी ऐसा नहीं कर सकता। लिहाज़ा हर दम गुनाहों से बचते रहना ज़रूरी है। **शफ़ाअ़त** की उम्मीद पर **अल्लाह पाक** और उस के **रसूल** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ना फ़रमानियां कर के ख़ुद को जहन्नम के अ़ज़ाब के लिये पेश करते रहना निहायत ख़त़रनाक है। **अल्लाह** पाक की **ख़ुफ़्या तदबीर** से हर वक़्त डरते रहना चाहिये अगर गुनाहों की नुहूसत से **ईमान** ही बरबाद हो गया तो **शफ़ाअ़त** कैसी ! ख़ुदा की क़सम ! हमेशा हमेशा के लिये दोज़ख़ की भड़क्ती आग और गूनागूं अ़ज़ाबों का सामना होगा। وَالْعِيَاذُ بِاللّٰه (**अल्लाह** पाक की पनाह) हां बचने की लाख कोशिश के बा वुजूद न चाहते हुए भी बसा अवक़ात जो आदमी गुनाहों में फंस जाता है, उसे चाहिये कि तौबा इस्तिग़्फ़ार भी करता रहे और शफ़ीए़ रोज़े महशर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से **शफ़ाअ़त** की ख़ैरात भी मांगता रहे।

ऐ शाफ़ेए उमम शहे ज़ी जाह ले ख़बर लिल्लाह ले ख़बर मेरी लिल्लाह ले ख़बर
मुजरिम को बारगाहे अ़दालत में लाए हैं तक्ता है बे कसी में तेरी राह ले ख़बर
अहले अ़मल को उन के अ़मल काम आएंगे मेरा है कौन तेरे सिवा आह ले ख़बर

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 67,68)

शर्ह़े कलामे रज़ा : ऐ तमाम उम्मतों की शफ़ाअ़त फ़रमाने वाले इ़ज़्ज़त वाले शहन्शाह ! صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ख़ुदारा ! मुझ गुनहगार की ख़बर लीजिये ! ऐ प्यारे आक़ा ! صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुजरिम की अ़दालत में पेशी हो चुकी है, गुनहगार ग़ुलाम निहायत बे कसी के आ़लम में **शफ़ाअ़त** की उम्मीद लिये आप صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की तशरीफ़ आवरी का मुन्तज़िर है। **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बेशक नेक बन्दों के लिये उन की नेकियां कार आमद होंगी, आह ! मुझ नेकियों से तही दामन (या'नी बिल्कुल ख़ाली) और सर ता पा गुनाहों से लिथड़े हुए ग़ुलाम का आप صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सिवा कौन है जो **शफ़ाअ़त** कर के अ़ज़ाबे नार से बचा ले !

तसल्ली रख तसल्ली रख न घबरा ह़श्र से अ़त्तार तेरा ह़ामी वहां पर आमिना का लाडला होगा

(वसाइले बख़्शिश, स. 188)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللہُ علٰی مُحَمَّد

कश्ती के मुसाफ़िर

ह़ज़रते नो'मान बिन बशीर رَضِیَ اللہُ عَنْہُ से मरवी है कि रसूलों के सालार, नबियों के सरदार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुश्कबार है : **अल्लाह** पाक की हुदूद में सुस्ती करने वाले और उन

में मुब्तला होने वाले की मिसाल उन लोगों जैसी है जिन्हों ने कश्ती में कुर्अ़ा अन्दाज़ी की, तो बा'ज़ के हिस्से में नीचे वाला हिस्सा आया और बा'ज़ के हिस्से में ऊपर वाला। पस नीचे वालों को पानी के लिये ऊपर वालों के पास जाना होता था, तो उन्हों ने इसे ज़हमत शुमार करते हुए एक कुल्हाड़ी ली और कश्ती के निचले हिस्से में एक शख़्स सूराख़ करने लगा, तो ऊपर वाले उस के पास आए और कहा कि तुझे क्या हो गया है ? कहा कि तुम्हें मेरी वज्ह से तक्लीफ़ होती थी और पानी के बिग़ैर गुज़ारा नहीं। अब अगर उन्हों ने उस का हाथ पकड़ लिया तो उसे बचा लिया और ख़ुद भी बच जाएंगे और अगर उसे छोड़े रखा तो उसे हलाक करेंगे और अपनी जानों को भी हलाक करेंगे। (بخاری،2/208،حدیث:2686)

गुनाहों की नुहूसत दूसरों को भी अपनी लपेट में लेती है

इस ह़दीसे पाक के तह़्त मिरआतुल मनाजीह़ में है : इस ह़दीस शरीफ़ में एक मिसाल के ज़रीए़ बुराई से रोकने और नेकी का हुक्म देने की अहम्मिय्यत को वाज़ेह़ किया गया और बताया गया कि अगर येह समझ कर اَمرٌ بِالْمَعرُوف وَنَہیٌ عَنِ الْمُنْکَر (या'नी नेकी की दा'वत देने और बुराई से मन्अ़ करने) का फ़रीज़ा तर्क कर दिया जाए कि बुराई करने वाला ख़ुद नुक़्सान उठाएगा हमारा क्या नुक़्सान है ! तो येह सोच ग़लत़ है, इस लिये कि उस के गुनाह के असरात तमाम मुआ़शरे को अपनी लपेट में ले लेते हैं और जिस त़रह़ कश्ती तोड़ने वाला अकेला ही नहीं डूबता बल्कि वोह सब लोग डूबते हैं जो कश्ती में सुवार हैं इसी त़रह़ बुराई करने वाले चन्द अफ़राद का येह जुर्म तमाम मुआ़शरे में नासूर बन कर फैलता है। (मिरआतुल मनाजीह़, 6/504)

या शैख़ ! अपनी अपनी देख !

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! "या शैख़ ! अपनी अपनी देख !" के तह़्त सिर्फ़ अपनी इस्लाह़ की फ़िक्र में लगे रहने के बजाए दूसरों की दुरुस्ती की त़रफ़ भी तवज्जोह देनी चाहिये, क्यूं कि कसीर गुनाह ऐसे हैं कि जिन का नुक़्सान दूसरों को भी पहुंचता है मसलन अगर कोई शख़्स चोरी का गुनाह करे तो उस शख़्स को भी नुक़्सान होगा जिस की चीज़ चुराई गई बिल्कुल येही मुआ़मला डाका डालने, अमानत में ख़ियानत करने, गाली देने, तोहमत लगाने, ग़ीबत करने, चुग़ली खाने, किसी के ऐ़ब उछालने, नाह़क़ किसी का माल खाने, ख़ून बहाने, किसी को बिला इजाज़ते शरई तक्लीफ़ पहुंचाने, क़र्ज़ दबा लेने, किसी की चीज़ उसे ना गवार गुज़रने के बा वुजूद बिला इजाज़त इस्ति'माल करने, मां बाप को सताने और बद निगाही करने वग़ैरा का है। अब अगर हर एक को इन गुनाहों के इरतिकाब की खुली छूट दे दी जाए फिर न तो किसी का माल सलामत रहेगा और न ही इ़ज़्ज़त ! बल्कि यूं कहना चाहिये कि हमारा मुआ़शरा **"दरिन्दों के जंगल"** का मन्ज़र पेश करने लगेगा। बा'ज़ गुनाह ऐसे हैं जिन के इरतिकाब से इन्सान की इ़ज़्ज़त को भी नुक़्सान पहुंचता है मसलन जो शख़्स चुग़ुल ख़ोर या ज़ानी या शराबी के त़ौर पर मश्हूर हो जाए तो सब पर इ़यां (या'नी ज़ाहिर) है कि मुआ़शरे में उस का क्या मक़ाम होता है ? और बा'ज़ गुनाह ऐसे हैं जो इन्सान के माल को नुक़्सान पहुंचाते हैं मसलन जूआ खेलने की लत पड़ जाना, सूद पर क़र्ज़ लेना, काम काज करने के बजाए फ़िल्में डिरामे देखने में मश्ग़ूल रहना, मज़्कूरा कामों में मुलव्वस अफ़्राद माली त़ौर पर जिस त़रह़ "दिन दुगनी रात चौगुनी" उलटी तरक़्क़ी करते हैं येह किसी

साहिबे अ़क़्ल से मख़्फ़ी (या'नी छुपा) नहीं। इन तमाम दुन्यावी नुक़्सानात के साथ साथ ऐसे शख़्स को उख़्रवी तौ़र पर भी ख़सारे (या'नी नुक़्सान) का सामना है, जो जहन्नम के भयानक और हौलनाक अ़ज़ाब की सूरत में पेश आ सकता है। وَالعِيَاذُ بِاللّٰه।

गुनाहों के पांच दुन्यावी नुक़्सानात

गुनाहों के दुन्यावी नुक़्सानात के ज़िम्न में **दा'वते इस्लामी** के **मक्तबतुल मदीना** की किताब, **"नेकियों की जज़ाएं और गुनाहों की सज़ाएं"** सफ़्हा 51 पर है : हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : **ऐ लोगो !** पांच बातों से बचने के लिये पांच बातों से बचो ﴾1﴿ जो क़ौम **कम तोलती** है **अल्लाह** पाक उन्हें महंगाई और फलों की कमी में मुब्तला कर देता है ﴾2﴿ जो क़ौम **बद अ़हदी** (या'नी वा'दा ख़िलाफ़ी) करती है **अल्लाह** पाक उन के दुश्मनों को उन पर मुसल्लत़ कर देता है ﴾3﴿ जो क़ौम **ज़कात** अदा नहीं करती **अल्लाह** पाक उन से बारिश का पानी रोक लेता है और अगर चौपाए न होते तो उन को पानी का एक क़त़रा भी न दिया जाता ﴾4﴿ जिस क़ौम में **फ़ह़्ह़ाशी** और **बे ह़याई** फैल जाती है **अल्लाह** पाक उन को त़ाऊ़न[1] के मरज़ में मुब्तला कर देता है और ﴾5﴿ जो क़ौम **क़ुरआने पाक** के बिग़ैर फ़ैसला करती है **अल्लाह** पाक उन को ज़ियादती (या'नी ग़लत़ फ़ैसले) का मज़ा चखाता है और उन्हें एक दूसरे के डर में मुब्तला कर देता है। (قرۃ العیون، ص392)

1... त़ाऊ़न को इंग्लिश में पलेग (PLAGUE) बोलते हैं, येह चूहे के पिस्सूओं के काटने से लाहिक़ होने वाला मोहलिक मरज़ है, इस में छाती, बग़ल या ख़ुस्ये के नीचे गिल्टियां (या'नी गांठें) निकलती हैं और तेज़ बुख़ार हो जाता है।

दुआ़ क़बूल न होगी

अफ़्सोस ! सद करोड़ अफ़्सोस ! आज कल मुसल्मानों में नेकियों का ज़ेहन बहुत कम हो गया है बस हर त़रफ़ गुनाहों का दौर दौरा है, नेकी की दा'वत की त़रफ़ भी कोई ख़ास रग़बत नहीं रही, आइये ! एक इ़ब्रतनाक रिवायत सुनिये और अपने आप को अ़ज़ाबे इलाही से डराइये चुनान्चे सरकारे मदीना, सुरूरे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है : क़सम है उस की जिस के हाथ में मेरी जान है, या तो तुम अच्छी बात का हुक्म करोगे और बुरी बात से मन्अ़ करोगे या **अल्लाह** पाक तुम पर जल्द अपना अ़ज़ाब भेजेगा फिर दुआ़ करोगे और तुम्हारी दुआ़ क़बूल न होगी । (ترمذی، 4/69، حدیث:2176) इस ह़दीसे पाक के तह़त **मिरआतुल मनाजीह़** में है : اَمْرٌ بِالْمَعْرُوف وَنَهِیٌ عَنِ الْمُنْكَر (या'नी नेकी का हुक्म देने और बुराई से मन्अ़ करने) की ज़िम्मेदारी से पहलू तही (या'नी टालम टोल) कितना बड़ा जुर्म है इस ह़दीस में निहायत वज़ाह़त के साथ इस का बयान किया गया। रसूले अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : या तो तुम्हें येह फ़रीज़ा अन्जाम देना होगा या **अल्लाह** पाक के अ़ज़ाब का सामना करना पड़ेगा और इस के बा'द अगर दुआ़ भी करोगे तो क़बूल न होगी, येह निहायत सख़्त क़िस्म की वई़द (या'नी सज़ा देने की धमकी) है या'नी जब तक तुम अपनी कोताही का इज़ाला (या'नी इसे दूर) नहीं करोगे और **अल्लाह** पाक से मुआ़फ़ी नहीं मांगोगे तुम्हारी कोई दुआ़ क़बूल न होगी । (मिरआतुल मनाजीह़, 6/505)

दे धुन मुझ को नेकी की दा'वत की मौला   मचा दूं मैं धूम उन की सुन्नत की मौला

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

मैं गुनाहों की तारिकियों में गुम था

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! नेक बनने और गुनाहों से बचने और ईमान की हिफ़ाज़त के लिये फ़ी ज़माना दा'वते इस्लामी का दीनी माहोल किसी ने'मते ग़ैर मुतरक़्क़बा (या'नी वोह दौलत जिस के हुसूल का गुमान न हो) से कम नहीं, आज के गुनाहों भरे माहोल में पलने वाले बड़े बड़े मुजरिम मदनी माहोल में आ कर اَلْحَمْدُلِلّٰہ सुन्नतों के सांचे में ढल गए। आइये ! इस ज़िम्न में एक "मदनी बहार" सुनते हैं चुनान्चे **एक** इस्लामी भाई के बयान का खुलासा पेशे ख़िदमत है : आशिक़ाने रसूल की दीनी तहरीक "दा'वते इस्लामी" के दीनी माहोल से वाबस्ता होने से क़ब्ल वोह गुनाहों की तारीकियों में गुम था। ग़फ़्लत के अंधेरों ने उन्हें दीन से अमलन इस क़दर दूर कर रखा था कि नमाज़, रोज़े की कुछ परवाह न थी। एक रोज़ जब हस्बे मा'मूल मेरे क़ारी साहिब घर में मुझे कुरआने पाक पढ़ाने के लिये आए तो उस वक़्त मैं T.V. पर डिरामा देखने में मसरूफ़ था, मैं ने कहा : "क़ारी साहिब ! आप तशरीफ़ रखिये मैं डिरामा देख कर अभी आ रहा हूं बस थोड़ा ही रह गया है।" क़ारी साहिब का हौसला भी कमाल का था, डांट डपट के बजाए निहायत ही शफ़्क़त से इन्फ़िरादी कोशिश करते हुए उन्हों ने दा'वते इस्लामी के मक्तबतुल मदीना का मत्बूआ रिसाला "टीवी की तबाह कारियां" पढ़ कर उन को सुनाया। रिसाला सुन कर बे इख़्तियार नदामत व शरमिन्दगी उन पर ग़ालिब आई और वोह ख़ौफ़े ख़ुदा से सर ता पा लरज़ उठे ! क़ारी साहिब की नसीहत पर अमल करते हुए उन्हों ने जब अपनी गुज़श्ता ज़िन्दगी का एहतिसाब किया तो उन का दिल रोने लगा कि

आह ! सद हज़ार आह ! मैं ने ज़िन्दगी का इतना बड़ा हिस्सा फ़ुज़ूलिय्यात व लग़्वियात में सर्फ़ हो गया और इस का एह़सास तक न हुवा ! اَلْحَمْدُ لِلّٰه उन्हों ने सिद्क़े दिल से तौबा की और अ़ज़्मे **मुसम्मम** कर लिया कि आइन्दा اِنْ شَآءَاللّٰه गुनाहों से बचता रहूंगा, नमाज़ की पाबन्दी करते हुए सुन्नतों भरी ज़िन्दगी गुज़ारने की कोशिश करता रहूंगा और **अल्लाह पाक और** उस के **रसूल** صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ना फ़रमानी, झूट, ग़ीबत, चुग़ली और वा'दा ख़िलाफ़ी वग़ैरा वग़ैरा से बचता रहेंगे। اَلْحَمْدُ لِلّٰه दा'वते इस्लामी के मुश्कबार दीनी माह़ोल ने उन की काया पलट दी और ऐसा बिगड़ा हुवा इन्सान भी सुधरने पर कमर बस्ता हो गया। **अल्लाह** पाक से दुआ़ है कि हमें दीनी माह़ोल में इस्तिक़ामत अ़ता फ़रमाए। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

तू नरमी को अपनाना झगड़े मिटाना रहेगा सदा ख़ुशनुमा मदनी माह़ोल
तू ग़ुस्से झिड़कने से बचना वगर्ना येह बदनाम होगा तेरा मदनी माह़ोल

(वसाइले बख़्शिश, स. 604)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علی مُحَمَّد

इन्फ़िरादी कोशिश करना सुन्नत है

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! इस मदनी बहार में इन्फ़िरादी कोशिश और दा'वते इस्लामी के मक्तबतुल मदीना का रिसाला "टीवी की तबाह कारियां" पढ़ कर सुनाने की बरकत का बयान है, हम सभी को चाहिये कि मौक़अ़ ब मौक़अ़ इन्फ़िरादी कोशिश के ज़रीए़ नेकी की दा'वत की तरकीब किया करें। यक़ीनन इन्फ़िरादी कोशिश के ज़रीए़ नेकी की दा'वत देना हमारे मीठे मीठे आक़ा صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की प्यारी प्यारी सुन्नत है और बे शुमार अह़ादीसे मुबारका इस पर दाल्ल (या'नी दलील) हैं।

मदनी बैग और लंगरे रसाइल

बयान कर्दा मदनी बहार में "टीवी की तबाह कारियां" रिसाले का भी ज़िक्र मौजूद है कि जब क़ारी साहिब ने अपने शागिर्द को मज़्कूरा रिसाला पढ़ कर सुनाया तो उन को **तौबा** की सआ़दत नसीब हुई, वोह नमाज़ी बने और दा'वते इस्लामी के दीनी माह़ोल से वाबस्ता हुए। जिन जिन इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों से बन पड़े एक "मदनी बैग" ख़रीद लें और उस में ह़स्बे तौफ़ीक़ **मक्तबतुल मदीना** के मत़्बूआ़ रसाइल, सुन्नतों भरे बयानात की कैसिटें वग़ैरा रखें। बेशक सारा दिन न सही सिर्फ़ ह़स्बे मौक़अ़ वोह मदनी बैग अपने साथ हो और रसाइल वग़ैरा दूसरों को तोह़फ़तन पेश किये जाएं। मौक़अ़ की मुनासबत से येह भी हो सकता है कि बा'ज़ को सिर्फ़ पढ़ने के लिये दें, जब वोह पढ़ कर लौटा दें तो दूसरा रिसाला पेश करें इसी त़रह़ कैसिटों और बड़ी किताबों की भी तरकीब की जा सकती है। यूं करने से आप बे अन्दाज़ा सवाब कमा सकते हैं मगर येह सब कुछ अपनी जेबे ख़ास से हो इस के लिये चन्दा न किया जाए। नीज़ **जश्ने विलादत** के मौक़अ़ पर या अपने मर्ह़ूम अ़ज़ीज़ों के ईसाले सवाब के लिये मुख़्तलिफ़ अवक़ात में **लंगरे रसाइल** की तरकीब भी फ़रमाइये। दर्स व इज्तिमाआ़त और मदनी मश्वरों में और ईसाले सवाब की मजालिस में **मक्तबतुल मदीना** के **मदनी रसाइल** वग़ैरा तक़्सीम फ़रमा कर ख़ूब ख़ूब नेकी की दा'वत आ़म करने का सवाब कमाइये।

बांटिये मदनी रसाइल मदनी बैग अपनाइये   और ह़क़दारे सवाबे आख़िरत बन जाइये

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

अ़ज़ाब नाज़िल होने का सबब

दा'वते इस्लामी के मक्तबतुल मदीना के तरजमे वाले पाकीज़ा कुरआन, "**कन्ज़ुल ईमान मअ़ ख़ज़ाइनुल इरफ़ान**" सफ़ह़ा 339 पर पारह 9 **सूरतुल अन्फ़ाल** की आयत नम्बर 25 में **अल्लाहु रब्बुल इबाद** इर्शाद फ़रमाता है :

﴿وَاتَّقُوْا فِتْنَةً لَّا تُصِيْبَنَّ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْكُمْ خَآصَّةً ۚ وَاعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿۲۵﴾﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और उस फ़ितने से डरते रहो जो हरगिज़ तुम में ख़ास ज़ालिमों ही को न पहुंचेगा और जान लो कि **अल्लाह** का अ़ज़ाब सख़्त है।

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इस के तह़्त फ़रमाते हैं : बल्कि अगर तुम उस से न डरे और उस के अस्बाब या'नी मम्नूआ़त को तर्क न किया और वोह फ़ितना नाज़िल हुवा तो येह न होगा कि उस में ख़ास ज़ालिम और बदकार ही मुब्तला हों बल्कि वोह (फ़ितना) नेक और बद सब को पहुंच जाएगा। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि **अल्लाह** पाक ने मोमिनीन को हुक्म फ़रमाया कि वोह अपने दरमियान मम्नूआ़त न होने दें या'नी अपने मक़्दूर तक (या'नी अपने बस और इख़्तियार के मुत़ाबिक़) बुराइयों को रोकें और गुनाह करने वालों को गुनाह से मन्अ़ करें अगर उन्हों ने ऐसा न किया तो अ़ज़ाब उन सब को आ़म होगा, ख़त़ाकार और ग़ैर ख़त़ाकार सब को पहुंचेगा। (تفسیر طبری،6/217،رقم:15923) ह़दीस शरीफ़ में है सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि **अल्लाह** पाक मख़्सूस लोगों के अ़मल पर अ़ज़ाब आ़म नहीं करता जब तक कि आ़म तौर पर लोग

ऐसा न करें कि मम्नूआत को अपने दरमियान होता देखते रहें और उस के रोकने और मन्अ़ करने पर क़ादिर हों बा वुजूद इस के न रोकें, न मन्अ़ करें जब ऐसा होता है तो **अल्लाह** पाक अ़ज़ाब में आ़म व ख़ास सब को मुब्तला करता है। (شرح السنۃ للبغوی،7/258،حدیث:4050) "अबू दावूद" की ह़दीस में है कि जो शख़्स किसी क़ौम में सरगर्मे मआ़सी (या'नी ना फ़रमानियों में मुब्तला) हो और वोह लोग बा वुजूद कुदरत के उस को न रोकें तो **अल्लाह** पाक मरने से पहले उन्हें अ़ज़ाब में मुब्तला करता है। (ابوداؤد،4/164،حدیث:4339) इस से मा'लूम हुवा कि जो क़ौम نَهْیٌ عَنِ الْمُنْكَر (या'नी बुराई से मन्अ़ करना) तर्क करती है और लोगों को गुनाहों से नहीं रोकती वोह अपने इस तर्के फ़र्ज़ की शामत में मुब्तलाए अ़ज़ाब होती है।

नेक शख़्स भी अ़ज़ाब में

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! फ़ी ज़माना मुसल्मानों की एक भारी ता'दाद रूह़ानी व जिस्मानी और समाजी व मआ़शी वग़ैरा त़रह़ त़रह़ की परेशानियों का शिकार है, कहीं नेकी की दा'वत के तर्क के सबब तो येह ह़ाल नहीं ? आप ख़ुद परहेज़गार और नेकोकार ही सही मगर दूसरों को नेकी की दा'वत नहीं देते और बा वुजूदे कुदरत गुनाहों से नहीं रोकते, आ़म मुसल्मानों बल्कि अपने घर वालों को बुराइयों में मुब्तला देख कर जी में कुढ़ते तक नहीं तो इस ह़दीसे मुबारका को बार बार पढ़िये, सुनिये और ख़ुद को अ़ज़ाबे इलाही से डरा कर नेकी की दा'वत पर कमर बस्ता हो जाइये चुनान्चे सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सुल्त़ाने मदीनए मुनव्वरह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : **अल्लाह** पाक ने ह़ज़रते जिब्रईल (عَلَيْهِ السَّلَام) को

हुक्म फ़रमाया : फ़ुलां शहर को उस के रहने वालों समेत ज़ेरो ज़बर कर दो, हज़रते जिब्रईल (عَلَيْهِ السَّلَام) ने अ़र्ज़ की : ऐ रब्बे करीम ! उन लोगों में तेरा एक फ़ुलां **नेक बन्दा** भी है जिस ने पलक झपक्ने की मिक़्दार भी तेरी ना फ़रमानी नहीं की। **अल्लाह** पाक ने फ़रमाया : اَقْلِبْهَا عَلَيْهِمْ فَاِنَّ وَجْهَهُ لَمْ يَتَمَعَّرْ فِيَّ سَاعَةً قَطُّ- या'नी शहर उन पर उलट दो क्यूं कि उस का चेहरा मेरी ना फ़रमानियां देख कर कभी मुतग़य्यर (या'नी तब्दील) नहीं हुवा। (شعب الایمان، 6/97، حدیث:7595)

मुआ़शरती बुराइयों के सबब परेशान होना ईमान का तक़ाज़ा है

इस ह़दीसे पाक के तह़त **मिरआतुल मनाजीह़** में है : इस ह़दीस शरीफ़ से वाज़ेह़ होता है कि जहां आ'माले सालिह़ा (या'नी नेकियों) से तअ़ल्लुक़ और बुराइयों से इज्तिनाब (या'नी परहेज़) ज़रूरी है वहां दीनो मिल्लत के ख़िलाफ़ साज़िशों और मुसल्मानों पर ज़ुल्मो सितम नीज़ मुआ़शरती बिगाड़ की वज्ह से **परेशान** होना भी ईमान का तक़ाज़ा है। जो लोग **अल्लाह** पाक की रिज़ा जूई की ख़ातिर मुआ़शरती बुराइयों के इज़ाले (या'नी ख़ातिमे) के लिये कोशां नहीं रहते और अ़दमे त़ाक़त (या'नी क़ुव्वत न होने) की सूरत में इस पर परेशान भी नहीं होते उन का **तक़्वा** किस काम का ! लिहाज़ा अपनी इस्लाह़ और इ़बादते ख़ुदा वन्दी में मश्ग़ूलिय्यत के साथ साथ मुल्क व मिल्लत और मुसल्मानाने आ़लम की ज़बूं ह़ाली के ख़ातिमे और मुआ़शरे को ग़ैर शर्ई ह़रकात व सकनात से पाक करने के लिये कोशां रहना हम सब की ज़िम्मेदारी है। (मिरआतुल मनाजीह़, 6/516)

नेक लोगों की हलाकत की वज्ह

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! जो ख़ुद नेकियों के ह़रीस होते हैं, पाबन्दिये वक़्त के साथ बा जमाअ़त नमाज़ें भी पढ़ते हैं, मगर दाढ़ी मुन्डे, मॉडर्न दोस्तों की सोह़बतों से कनारा कशी करने के बजाए मह़ज़ ह़ज़्ज़े नफ़्स की ख़ाति़र (या'नी मज़े लेने के लिये) उन की बैठकों की रौनक़ बनते उन की ग़ैर मोह़तात़ और गुनाहों भरी बातों में अगर्चे चुप रहते मगर दिल ही दिल में लुत़्फ़ अन्दोज़ होते हैं कि ज़ाहिर है नफ़्स को मज़ा न आता होता तो ऐसों के साथ क्यूं दोस्तियां निभाते ! अब जो रिवायत पेश की जा रही है वोह ऐसे लोगों के लिये ताज़ियानए इ़ब्रत (या'नी नसीह़त व इ़ब्रत का चाबुक) है चुनान्चे मन्क़ूल है : **अल्लाह** पाक ने ह़ज़रते यूशअ़ बिन नून عَلَيْهِ السَّلَام पर वह़ी भेजी कि आप की क़ौम के **एक लाख** आदमी अ़ज़ाब से हलाक किये जाएंगे जिन में **चालीस हज़ार** नेक हैं और साठ हज़ार बद । आप عَلَيْهِ السَّلَام ने अ़र्ज़ की : या रब्बे करीम ! बद किरदारों की हलाकत की वज्ह तो ज़ाहिर है लेकिन **नेक** लोगों को क्यूं हलाक किया जा रहा है ? इर्शाद फ़रमाया : "येह नेक लोग भी उन बद किरदारों के साथ खाते और पीते हैं, मेरी ना फ़रमानियां और गुनाह देख कर कभी उन के चेहरों पर ना गवारी का असर तक नहीं आता ।" (شعب الایمان، 7/53، رقم:9428)

अपने दिल में बुरा जान

दा'वते इस्लामी के मक्तबतुल मदीना की किताब, **"जन्नत में ले जाने वाले आ'माल"** (743 सफ़ह़ात) सफ़ह़ा 595 पर है : ह़ज़रते अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से रिवायत है कि हुज़ूरे पाक صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का

फ़रमाने इब्रत निशान है : तुम में से कोई जब किसी बुराई को देखे तो उसे चाहिये कि बुराई को अपने **हाथ** से बदल दे और जो अपने हाथ से बदलने की इस्तिता़अ़त (या'नी कुव्वत) न रखे उसे चाहिये कि अपनी **ज़बान** से बदल दे और जो अपनी **ज़बान** से बदलने की भी इस्तिता़अ़त न रखे उसे चाहिये कि अपने **दिल** में बुरा जाने और येह कमज़ोर तरीन ईमान की अ़लामत है।

(مسلم، ص44، حدیث:49-نسائی، ص802، حدیث:2018)

क्या हम दिल में बुरा जानते हैं ?

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अपने ज़मीर से सुवाल कीजिये कि किसी को गुनाह करता देख कर हाथ या ज़बान से रोकने में ख़ुद को लाचार पाने की सूरत में आया आप ने दिल में बुरा जाना ? सद करोड़ अफ़्सोस ! बच्चों की अम्मी खाना पकाने में ताख़ीर कर दे, खाने में नमक तेज़ हो जाए, बेटा स्कूल की छुट्टी कर ले तो ज़रूर ना गवार गुज़रे लेकिन घर वालों की रोज़ाना पांचों नमाज़ें क़ज़ा हो रही हों तो माथे पर बल तक न आए, उन्हें समझाने की कोशिश तक न की जाए, हा़लां कि अगर बच्चा दस बरस का हो जाए और नमाज़ न पढ़े तो बाप पर **वाजिब** है कि मार कर भी पढ़ाए। वरना गुनहगार और अ़ज़ाबे नार का ह़क़दार होगा। आप ही कहिये ! क्या आप की येह रविश दुरुस्त है ? मसलन मह़कूम औलाद की बुराई देख कर हा़किम (या'नी वालिद) **हाथ** से बदले, आ़लिम **ज़बान** से बदले, जिस को येह दोनों क़ुदरतें हा़सिल नहीं वोह कम से कम **दिल** में तो बुरा जाने, मगर अब ऐसा ज़ेहन किस का रहा है ! आप सोचिये ! मसलन **म्यूज़िक** बज रहा

है, बेशक रोकने पर कुदरत नहीं मगर क्या येह आप के दिल में खटक रहा है ? क्या आप इसे बुरा महसूस कर रहे हैं ? जी नहीं, इस लिये कि खुद अपने मोबाइल में भी तो مَعَاذَاللّٰه "म्यूज़ीकल ट्यून" मौजूद है ! दो अफ़राद गली में **गालम गलोच** कर रहे हैं, बुरा लगा ? जी नहीं, क्यूं ? इस लिये कि कभी कभी अपने मुंह से भी مَعَاذَاللّٰه **गाली** निकल ही जाती है। फुलां ने झूट, बोला, आप को ना गवार गुज़रा ? जी हां क्यूं ? इस लिये कि मेरा ज़ाती नुक़्सान हुवा, बाक़ी **अल्लाह** पाक की रिज़ा के लिये बुरा कहां से लगेगा कि खुद अपनी ज़बान से भी مَعَاذَاللّٰه **झूट** निकल ही जाता है। येह मिसालें सिर्फ़ चोट करने के लिये हैं, वरना बहुत सारों की ह़ालत येह है कि अपने फ़ोन में म्यूज़ीकल ट्यून नहीं। गाली और झूट की आ़दत नहीं, फिर भी "**दिल में बुरा जानने**" का ज़ेहन नहीं। अगर रिज़ाए इलाही के लिये ह़क़ीक़ी मा'नों में बुराई को दिल में बुरा जानने की सोच बन जाए, कुढ़ने की आ़दत पड़ जाए तब तो मुआ़शरे में इस्लाह़ का दौर दौरा हो जाए क्यूं कि जब हम बुराइयों को दिल से बुरा समझने में खुद पक्के हो जाएंगे, तो दूसरों को समझाना भी शुरूअ़ कर देंगे और اِنْ شَآءَاللّٰه हर त़रफ़ **सुन्नतों की बहार** आ जाएगी और "**नेकी की दा'वत**" की धूम मच जाएगी। **अल्लाह** पाक हमारे ह़ाल पर रह़्म फ़रमाए और हमें अ़क़्ले सलीम दे कि हम भी ख़ूब ख़ूब **नेकी की दा'वत** और आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नत की धूम मचाने वाले बन जाएं।

अगले हफ़्ते का रिसाला